शोध मंथन Vol. XVI No.2 Apr.- June. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-june-2025-no2*

ब्रिटिश शासन के अंतर्गत रुहेलखंड क्षेत्र में कृषि तथा अर्थव्यवस्था का विकास

प्राप्तिः 10.05.2025
स्वीकृतः 12.06.2025

51

डॉ0 समन जेहरा जैदी
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
गाँधी–फैज–ए–आम कॉलेज, शाहजहांपुर
(महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विवि, बरेली)

वंदना गुप्ता
शोध छात्रा

सारांश

रुहेलखंड, जो वर्तमान उत्तर प्रदेश के बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, बदायूं, पीलीभीत, बिजनौर, और शाहजहांपुर जिलों में फैला हुआ है, का एक समृद्ध इतिहास है। सल्तनत काल से 1947 तक, इस क्षेत्र ने विभिन्न शासकों और साम्राज्यों के शासन के तहत कृषि और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास देखा। इन शासनों के दौरान, कृषि प्रणाली, भूमि उपयोग, आर्थिक ढांचे और सामाजिक स्थितियों में कई बदलाव हुए, जिसने इस क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक ताने–बाने को आकार दिया। दिल्ली सल्तनत के अधीन रुहेलखंड की कृषि व्यवस्था पारंपरिक थीद्य आंतरिक संघर्षों और मंगोल आक्रमणों ने अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। मुगल साम्राज्य के अधीन कृषि उत्पादन और अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार हुए। इस समय, गन्ना, कपास, और अन्य नकदी फसलों की खेती को बढ़ावा दिया गया, जिसने रुहेलखंड की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। बरेली और रामपुर जैसे शहर व्यापारिक केंद्रों के रूप में उभरे, जहां व्यापार और वाणिज्य की गतिविधियां बढ़ीं। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में भूमि कर व्यवस्था में बदलाव हुआ और स्थाई बंदोबस्त प्रणाली लागू की गई। अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में नकदी फसलों, जैसे नील, कपास, और गन्ना, की खेती को बढ़ावा दिया। ब्रिटिश नीतियों के कारण क्षेत्र में कृषि उत्पादन में वृद्धि तो हुई, लेकिन किसानों की स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ। ब्रिटिश काल में रेलवे और सड़कों का विकास हुआ,जिससे क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई।

मुख्य बिंदु

जलप्रवाह, अर्थव्यवस्था, व्यापारिककेन्द्र, कृषिक्षेत्र, औपनिवेशिक, रेलवे

वर्तमान मुरादाबाद, रामपुर, बदायूँ, बरेली, पीलीभीत एवं शाहजहाँपुर जनपद के क्षेत्र मध्यकाल में कठेर नाम से जाने जाते थे। कठेर की दक्षिण पश्चिम सीमा पर गंगा नदी, उत्तर की सीमा पर कुमायूँ का पहाड़ी क्षेत्र तथा पूर्वी सीमा पर अवध का क्षेत्र था। रुहेलों के समय इसकी सीमा में विस्तार हुआ और कुमाऊँ,सम्भल,अमरोहा,बिजनोर,आंवला के समस्त क्षेत्र रियासत रुहेलखण्ड कहलाये[1]।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.51

रुहेलखंड ,उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तर–पश्चिम हिस्से में स्थित है। 10 नवंबर 1801 को संधि पत्र पर हस्ताक्षर के बाद रुहेलखंड पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए कृषि का महत्व अत्यधिक व्यापक और महत्वपूर्ण है। कृषि न केवल खाद्य उत्पादन का आधार है बल्कि यह अर्थव्यवस्था, रोजगार और सांस्कृतिक धरोहर का भी मुख्य स्रोत है। रुहेलखंड का क्षेत्र गंगा और यमुना नदियों के बीच स्थित होने के कारण कृषि के लिए अनुकूल था। सल्तनत काल में कृषि तकनीकें अपेक्षाकृत सरल थीं, और सिंचाई के साधन सीमित थे। भूमि का विभाजन अधिक था और खेती मुख्य रूप से अनाज (गेहूं, जौ, चना) और दलहन (मूंग, मसूर) पर आधारित थी[2]। रुहेलों के समय कृषि तकनीकों में सुधार हुआ। इस समय फसल का विविधीकरण हुआ। अनाज के अलावा, गन्ना, कपास, और मसालों की खेती भी प्रचलित हुई। अकबर के शासनकाल में टोडरमल द्वारा भू–राजस्व प्रणाली में सुधार किए गए, जिसमें किसानों से सीधे कर वसूलने का प्रावधान था।

रुहेलखंड की भू–संरचना सभी प्रकार की कृषि उत्पादन के अनुकूल थी एवं क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या कृषि उत्पादन व्यवस्था पर ही निर्भर थी। दिल्ली के निकटवर्ती केन्द्रीय क्षेत्र में स्थित रुहेलखण्ड का क्षेत्र अपने खाद्यान्न उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता था। रुहेलखंड क्षेत्र भू–संरचना को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित कर दर्शाया गया है क्रमशः कृषि योग्य भूमि, बंजर एवं वन भूमि तथा उत्तरी भागों में विस्तृत पहाड़ी क्षेत्रों की जंगली भूमि।

भावर, तराई, खादर एवं बांगर के वर्गीकरण का आधार रुहेलखण्ड के उत्तरी भागों में अवस्थित पहाड़ी क्षेत्रों से बहकर आई नदियों के अपवाह क्षेत्र के कारण था। इन नदियों में मुख्यतः गंगा एवं रामगंगा, बहगुल, गोमती, गर्रा आदि प्रमुख थीं। उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों से नदियों के साथ बहकर आए पत्थरों एवं कंकड़ों के जमाव से निर्मित भूमि को भावर प्रकार की भूमि कहा जाता था। यह सामन्यतः रुहेलखण्ड में बिजनौर के नजीबाबाद, अफजलगढ़, मुरादाबाद के ठाकुरद्वारा, पीलीभीत के माधोटांडा जैसे क्षेत्रों में विस्तृत व्यापारिक मार्गों पर स्थित होने एवं वन्य उत्पादों के व्यापार में संलग्न होने के कारण इसका महत्त्व बना रहा।

रुहेलखंड में उत्तरी भागों के पहाड़ी क्षेत्रों की तलहटी में घने जंगलों की एक विस्तृत श्रृखंला पाई जाती थी। नदियाँ यहाँ जलजमाव की स्थिति उत्पन्न करती थीं, जिसके कारण जंगलों एवं जलाकृांत भूमि को सामान्य तौर पर तराई के नाम से जाता था। तराई क्षेत्रों का अपना एक आर्थिक महत्व भी है। कुमायूँ, गढ़वाल जैसे क्षेत्रों से आने वाले व्यापारी अपने बैलों, घोड़ों एवं खच्चरों के लिए तराई क्षेत्रों का उपयोग चारागाह के रूप में कर रहे थे। बंजारा व्यापारी इस क्षेत्र में 16शताब्दी से ही सक्रिय थे। लंबी दूरी के काफिला व्यापार मे भूमि–संरचना के इसी क्रम में रुहेलखण्ड में खादर एवं बांगर प्रकार की भूमि भी विस्तृत थी। यह भूमि नदियों के अपवाह मार्ग के आधार पर विभाजित थी परंतु कृषि उत्पादन की दृष्टि से दोनों प्रकार की भूमि उपयोगी थीं। प्रत्येक वर्ष बाढ़ द्वारा निक्षेपित नवीन जलोढ़ मिट्टी यहाँ के कृषकों के लिए वरदान से कम नहीं थी, जो रबी की फसल के लिए विशेष स्थान रखती थी। रुहेलखंड क्षेत्र की प्रमुख नदी रामगंगा के अपवाह क्षेत्र[3] में होने वाले कृषि उत्पादन का विशेष स्थान था।

रुहेलखंड के बरेली, मुरादाबाद, रामपुर, शाहजहाँनपुर, बदायूँ क्षेत्र उच्च उत्पादकता वाली मिट्टी से संपन्न क्षेत्र थे। इन क्षेत्रों में रबी एवं खरीफ सभी प्रकार की फसलों का उत्पादन हो रहा था

साथ ही गैर–खाद्यान्न प्रकार का उत्पादन भी महत्त्वपूर्ण था द्य उचित सिंचाई व्यवस्था ने भी कृषि उत्पादन प्रणाली को सफल बनाया है। हिमालयी क्षेत्र से बहकर आने वाली नदियाँ प्राकृतिक रूप से सिंचाई के साधन उपलब्ध करवाती है। बिजनौर क्षेत्र में नहरें सिंचाई का मुख्य साधन हैं। यहाँ पर नहरों के दो तन्त्र हैं नगीना नहर और निहतौर नहर योजना। नगीना नहर के निर्माण का पहला प्रस्ताव 1824 में क्रियान्वित हुआ, 1840 में निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। निहतौर नहर योजना 1850 में क्रियान्वित हुई थी। इसे मूल रुप से निचली गंगा नहर कहा गया।

मुरादाबाद में नहरों के अतिरिक्त कुएं एवं नलकूप भी यहां सिंचाई के मुख्य साधन हैं। रामपुर में कुएँ सिंचाई का एक अच्छा साधन है। यहां पर कुओं से ढेकली अथवा चरखी के माध्यम से पानी निकाला जाता है। कोसी नदी से निकली 'कोसी नहर' रामपुर में सिचाई का मुख्य साधन है। इसका निर्माण 1899 में हुआ था। *अली मोहम्मद खान एवं हाफिज रहमत खान* जैसे प्रमुख रुहेला सरदारों ने यहाँ पर नहरों के निर्माण कार्य को बढ़ावा देकर सिंचाई कार्य को और विकसित करने का कार्य किया। इसके लिए नवाब अली मोहम्मद खान ने अरील नदी से एक नहर निकलवायी थी, जो सात मील लम्बी दूरी तय करके उसके क्षेत्र आँवला तक जाती थी। इसी प्रकार बहगुल नदी से नहर निकलवाकर यहाँ के रिच्छा, जहानाबाद, नवाबगंज परगनों में सिंचाई की व्यवस्था को बढ़ावा दिया। सिंचाई व्यवस्था ने कृषि उत्पादन के साथ यातायात, परिवहन एवं स्थानीय आर्थिक उत्पादनों में सहायक भूमिका का निर्वाह कर प्रत्यक्ष रूप से क्षेत्रीय राज्य निर्माण में योगदान दिया। रुहेलखंड को चीनी, तम्बाकू, जैसी वाणिज्यिक फसलों के साथ–साथ चावल, गेहूँ जैसे खाद्यान्न फसलों के उत्पादन वाले क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता हैं। इस समय रुहेलखण्ड के नगर एवं कस्बे अनाज मंडियों के लिए भी जाने जाते थे। मुरादाबाद क्षेत्र का चन्दौसी कस्बा एक बड़ी आनाज मंडी के रूप में स्थापित हो चुका था, जहाँ से अनाज दिल्ली की शाहदरा मण्डी को भेजा जाता था। पर्याप्त कृषि एवं गैर–कृषि उत्पादन के कारण राजस्व वसूली के माध्यम से सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति की गई और एक क्षेत्रीय राज्य के निर्माण को आकार दिया गया।

औपनिवेशिक काल में रुहेलखंड पर अंग्रेजों के नियंत्रण के बाद कृषि, राजस्व प्रणाली और भूमि संबंधी नीतियों में बदलाव हुए। अंग्रेजों ने जमींदारी प्रथा को बढ़ावा दिया, नगदी फसलों (जैसे नील, कपास) की खेती को प्रोत्साहित किया,कृषि उत्पादों का बाजारों तक पहुंचना आसान बनाया। रुहेलखंड में अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न थी और कृषि उनकी आजीविका का मुख्य साधन थी, फिर भी इसके साथ–साथ यहाँ के ग्रामीण समुदाय की कुछ गैर–कृषि उत्पादनकारी आर्थिक गतिविधियाँ भी नजर आती हैं, जिनका रुहेलखंड के ग्रामीण जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहाँ पर कृ
f'k ,oa xSj&—f'k mRiknu Øo;LFkk dk dk;Z djrh Qk foHkkt u ugha Fkk] cfYd ;gk¡ ds dqN lequk;[4]
जैसे बढ़ई, लोहार, कोरी आदि गैर–कृषि उत्पादन कार्यों के साथ कृषि कार्यों में भी संलग्न थे। गैर–कृषि उत्पादन में संलग्न रुहेलखंड के कुछ प्रमुख समुदायों की आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन करते हैं तो कुम्हार ग्रामीण स्तर पर मिट्टी के बर्तनों का निर्माण कर स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। लोहार कृषि उपकरणों एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं का निर्माण कर रहे थे। अहीर समुदाय पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन में लगा था। जुलाहा समुदाय को स्थानीय स्तर पर बुनकर के रूप में जाना जाता था। रुहेलों ने सूती वस्त्र उत्पादन में जुलाहों को पर्याप्त प्रोत्साहन प्रदान किया था, बड़ी संख्या में सामान्य अफगान परिवार भी इस पेशे में लगे हुए थे।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.51

बिजनौर में छोटे–2 बाजार थे जो सप्ताह में एक या दो बार ही माल एकत्र करके दूसरे बाजारों में पहुंचाते थे। दालें, सामान्य वस्तुएँ तथा गन्ना खाण्डसारी और कत्था काफी बड़े पैमाने पर विक्रय होते थे। पुराना व्यापारिक केन्द्र दारानगर या दारागंज था जोकि बिजनौर से 3.8 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। 1824 में जब नगीना से मुख्य कार्यालय बिजनौर स्थानान्तरित हुआ तब बिजनौर मुख्य व्यापारिक केन्द्र हो गया। संसाधनों के विकास के साथ ही व्यापार का दायरा बढ़ा और इस क्षेत्र से गन्ना, बांस तथा अन्य वन्य उपज निर्यात होने लगी। यहां मुख्यतः नमक कपड़ा, धातुयें एवं मसाले आयात होते थे।

रामपुर एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था[5]। यहां का उत्कृष्ट उत्पाद सूती वस्त्र 'खेस' था। इसका प्रमुख उत्पादन क्षेत्र रामपुर ही है। चीनी मिट्टी के बर्तनों के उत्पादन में भी रामपुर अग्रणी है। रामपुर में तलवार, चाकू छुरी आदि का निर्माण कार्य भी व्यापक पैमाने पर होता है। यहां के दस्तकारों के द्वारा तैयार किये सरौता और चाकू उच्चस्तरीय होते हैं।

मुरादाबाद भी एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र रहा है[6]। रुहेलों के समय से चन्दौसी गेहूं के निर्यात का प्रमुख केन्द्र रहा है। 19वीं शताब्दी में यहां के प्रमुख उत्पाद गन्ना, चावल, कपास, मोटा कपड़ा, घी, और पीतल के बर्तन थे। अच्छी सड़कें, जो मुरादाबाद को दिल्ली, मेरठ, बिजनौर, बरेली, अलीगढ़ एवं बदायूं से जोड़ती हैं बाजार की संरचना पर विशेष प्रभाव डालती हैं। यहाँ से चीनी व खाण्डसारी मेरठ जाती थी। कपड़े का व्यापार मुख्यतः घुमन्तु व्यापारी करते थे। 1872 में रेलवे के प्रवेश ने यहाँ के व्यापार में वृद्धि की।

इसके अलावा रुहेलखंड को एक क्षेत्रीय आर्थिक महत्व[7] प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण कारक था, इसका क्षेत्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय व्यापारिक संपर्क। इस समय रुहेलखंड के प्रमुख नगर एवं कस्बे जैसे बरेली, पीलीभीत, सहारनपुर, शाहजहाँनपुर, आँवला, अमरोहा, शाहाबाद आदि जहाँ परस्पर व्यापारिक लेन देन में लगे हुए थे, वहीं दिल्ली, अवध, बनारस एवं बुन्देलखण्ड जैसे क्षेत्रों के साथ भी उसका व्यापारिक लेन–देन था। इस व्यापार में खाद्यान्न के साथ–साथ वाणिज्यिक प्रकार की सामग्री जैसे चीनी, सूती वस्त्र, तम्बाकू एवं औषधियाँ भी शामिल थी। रुहेलखंड की कुछ अन्य प्रमुख स्थानीय आर्थिक गतिविधियों की चर्चा करें तो सर्वप्रथम चीनी उद्योग एवं सूती वस्त्र उद्योग उल्लेखनीय प्रतीत होता है। शाहजहाँनपुर, बरेली, मुरादाबाद, बदायूँ गन्ने की कृषि के केन्द्रीय क्षेत्र थे। रुहेलखंड में गन्ने से चीनी उत्पादन परंपरागत विधि से ही किया जाता था। स्थानीय स्तर पर गन्ने की कृषि से लेकर चीनी उत्पादन तक प्रत्येक स्तर पर यहाँ के स्थानीय समुदाय संलग्न थे।

रुहेलखंड में उत्पादित गुड़ को खाण्डसारी के नाम से भी जाना जाता था, खाण्डसारी जो कि चीनी उत्पादन से पूर्व की अवस्था थी, उसे सफेद चीनी में बदलकर स्थानीय बाजारों, कस्बों एवं शहरों में विक्रय हेतु भेजा जाता था। रामपुर में सूती वस्त्र के साथ–साथ दरी एवं कालीन का भी पर्याप्त मात्रा में उत्पादन हो रहा था। इसके अतिरिक्त मुरादाबाद, संभल, बदायूँ एवं शाहजहाँनपुर के साथ यहाँ के कस्बे भी दरी एवं कालीन के हस्त उत्पादन में लगे हुए थे। इसकी गुणवत्ता एवं टिकाऊपन के कारण पंजाब से लेकर कलकत्ता एवं दक्षिण में मालवा तक इसकी माँग बनी रहती थी। रुहेलखंड में एक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यवसायिक उद्यम लकड़ी का उद्योग था, यहाँ के पीलीभीत, बिजनौर, रामपुर, बरेली के उत्तरी भागों के तराई एवं पहाड़ी क्षेत्रों में घने जंगलों का विस्तार था। यहाँ पर साल, सागोन, शाखू, शीशम, माहू एवं बाँस जैसे वृक्षों की कीमती इमारती लकड़ी की प्राप्ति होती

थी। इस समय पीलीभीत, नजीबाबाद, बरेली जैसे नगर लकड़ी उद्योग के महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित हो गये थे।

रुहेलखंड में एक महत्त्वपूर्ण उद्योग प्रगति पर था, वह था हौजरी उद्योग, बर्तन बनाने का उद्योग जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय समुदाय संलग्न थे। यहाँ पर रामपुर हौजरी एवं बर्तन बनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गया था, इसके अतिरिक्त बरेली, शाहजहाँनपुर एवं मुरादाबाद जैसे क्षेत्रों में भी यह उद्योग प्रगति पर था। रामपुर ताँबा, काँसा एवं पीतल के बर्तनों के साथ–साथ मिट्टी के रंगीन चित्रकारी से परिपूर्ण आकर्षक बर्तन बनाने का केन्द्र भी था। बरेली एवं मुरादाबाद पीतल एवं ताँबे के बर्तन बनाने का प्रमुख केन्द्र थे, मुरादाबाद का अमरोहा कस्बा बर्तनों पर नक्काशी हेतु विशेष रूप में प्रसिद्ध था। यहाँ के बर्तन बुलंदशहर के खुर्जा से भी अच्छे किस्म के माने जाते थे। रुहेलखंड इस समय सैन्य सामग्री के उत्पादन का भी एक प्रमुख केन्द्र था। यहाँ पर रुहेला सरदार, अस्त्र–शस्त्र के उत्पादन को बढ़ावा दे रहे थे। नफीस सिद्दीकी रुहेलों[8] के सैन्य सामग्री उत्पादन के सन्दर्भ में बताते हैं कि *"रुहेला सरदार नवाब अली मोहम्मद खान एवं हाफिज रहमत खान के समय में रुहेलखंड के तराई क्षेत्रों में अस्त्र–शस्त्र बनाने के कारखाने थे, जिसमें पीपली नामक स्थान पर बिलासपुर तहसील जिला रामपुर में उनका एक बड़ा कारखाना था, जहाँ पर बारह सौ लोहार एवं बढ़ई हथियार बनाने का काम करते थे। इसके अतिरिक्त रुहेलों ने यहाँ के तराई क्षेत्रों में अपने अस्त्र–शस्त्र उत्पादन के कारखाने खोल रखे थे, जिनमें बिसौली एवं मुरादाबाद प्रमुख थे।"*

इस सन्दर्भ रामपुर गजेटियर से जानकारी प्राप्त होती है कि रामपुर युद्ध सामग्री के निर्माण का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ पर चाकू, तलवार एवं तोड़ीदार बंदूकों का उत्पादन बड़ी मात्रा में होता था। साथ ही इसकी गुणवत्ता भी उच्चकोटि की होती थी, जिसके कारण यहाँ के औजारों की माँग अन्य क्षेत्रों में सदैव बनी रहती थी। रामपुर के चाकू एवं तलवार अपनी तकनीकी गुणवत्ता के कारण महत्त्वपूर्ण थे। दूसरी तरफ रुहेलखंड का व्यापार इस समय उत्तर–पश्चिम के काबुल, लाहौर, कंधार एवं कश्मीर जैसे दूरस्थ नगरों से भी हो रहा था। इस व्यापार में सबसे महत्वपूर्ण वस्तुएँ थीं, युद्ध आवश्यकताओं के अनुरूप घोड़ों की माँग। उत्तर–पश्चिम[9] के व्यापारी अपने साथ घोड़े एवं कीमती पत्थर, धातुएँ आदि के बदले यहाँ से अनाज, सूतीवस्त्र एवं औषधियों की प्राप्ति करते थे। रुहेलखंड क्षेत्र के रुहेला सरदारों, राजाओं, जमींदारों एवं मुगल प्रशासनिक अभिजात्य वर्गों ने उत्तर–पश्चिम की बहुमूल्य वस्तुएँ जैसे रत्न–आभूषण, कीमती पत्थर, कश्मीरी शॉल आदि की माँग बनाए रखी थी। इसके साथ ही यहाँ पर व्यापारिक लेन–देन में प्रचलित कुछ सिक्कों की जानकारी भी प्राप्त होती है। यद्यपि स्थानीय लेन–देन में वस्तु विनिमय प्रणाली भी देखने को मिलती थी, लंबी दूरी के व्यापार में सोने–चाँदी के कीमती सिक्कों का भी प्रचलन था। इस सन्दर्भ में देखें तो इस समय रुहेलखंड में मुगल टकसालों के सिक्के ही विशेष रूप से प्रचलन में थे, यद्यपि रुहेलों ने भी अपनी टकसाले स्थापित की थी विशेष कर अली मोहम्मद खान द्वारा आँवला में एक टकसाल स्थापित की गई थी[10]। पश्चिम से होने वाले व्यापार में मुगल स्वर्ण सिक्कों को ही अधिक मान्यता प्राप्त थी।

ब्रिटिश शासन के दौरान रेलवे, सड़क और नहरों का विस्तार किया गया, जिससे माल और लोगों के आवागमन में सुविधा हुई। हालांकि, इस विकास का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के आर्थिक हितों की पूर्ति करना था, न कि स्थानीय लोगों के जीवन को सुधारना। रेलवे का उपयोग

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.51

मुख्य रूप से कृषि उत्पादों और कच्चे माल के निर्यात के लिए किया गया, जिससे ब्रिटिश व्यापारिक हितों को लाभ हुआ। परिवहन के साधनों के विकास ने रुहेलखंड के बाजारों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन इसका लाभ स्थानीय किसानों और शिल्पकारों को नहीं मिला। ब्रिटिश अधिकारियों ने नकदी फसलों की खेती को बढ़ावा दिया, जिसमें नील, कपास, और गन्ना प्रमुख थे। इन फसलों का उत्पादन यूरोपीय बाजारों में निर्यात के लिए किया जाता था, जिससे ब्रिटिश सरकार को भारी मुनाफा होता था। ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति के चलते यूरोप में मशीनों द्वारा निर्मित वस्त्र और अन्य वस्तुओं का उत्पादन तेजी से बढ़ा, जो भारतीय बाजारों में सस्ते दामों पर बेची जाने लगीं। ब्रिटिश शासन के दौरान, रुहेलखंड में परिवहन और संचार के साध ानों का विकास हुआ ब्रिटिश शासन के दौरान रुहेलखंड में सामाजिक और आर्थिक असमानता बढ़ी। ब्रिटिश समर्थक वर्ग आर्थिक रूप से सशक्त होते गए। ब्रिटिश शासन ने जमींदारी प्रथा को लागू किया, जिसमें जमींदारों को भूमि का मालिकाना हक दिया गया और किसानों को उनसे भूमि किराए पर लेनी पड़ी।

निष्कर्ष

रुहेलखंड का कृषि और आर्थिक विकास विभिन्न कालों में राजनीतिक परिस्थितियों और प्रशासनिक नीतियों के अनुसार बदलता रहा है।सल्तनत और मुगल काल में जहां कृषि और अर्थव्यवस्था में विकास हुआ,वहीं औपनिवेशिक काल में कृषि विस्तार और आधारभूत संरचना में सुधार हुआ।ब्रिटिष औपनिवेषिक काल में रुहेलखण्ड की अर्थव्यवस्था में कई बदलाव आए। आधुनिकीकरण के प्रयासों ने धीरे–धीरे रुहेलखण्ड की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया।

संदर्भ

1. एवेल,डब्लू सी (1931), गजेटियर ऑफ रामपुर,इलाहाबाद : उत्तर प्रदेश सरकार, पृ० सं०–79
2. एस. एम. मोन्स,द रिपोर्ट ऑफ द सेटेलमेन्ट ऑफ द बरेली डिस्ट्रिक,नॉर्थ वेस्टर्न प्रॉविन्सस, पृ० सं०–4–7
3. सैयद अल्ताफ अली बरेलवी, हयात–ए–हाफिज रहमत खान, पृ० सं०–41–42
4. नेविल,एच.आर.(1911),डिस्ट्रिक गजेटियर बरेली, खंड13, इलाहाबाद , पृ० सं०–197
5. चोपडा,पी.एन.(1975), डिस्ट्रिक गजेटियर ऑफ रामपुर पृ० सं०–7–8
6. गजेटियर ऑफ मुरादाबाद डिस्ट्रिक, वॉल्यूम–ग्ट द यूनाइटेड प्रॉविन्सस ऑफ आगरा एवं अवध, इलाहाबाद द सुप्रिटेंडेंट गवर्नमेन्ट प्रेस, यूनाइटेड प्रॉविन्सस, 1911
7. गजेटियर ऑफ बदायूँ डिस्ट्रिक, खण्ड–ग्ट, द यूनाइटेड प्रॉविन्सस ऑफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबादःद सुप्रिटेंडेंट गवर्नमेन्ट प्रेस, यूनाइटेड प्रॉविन्सस, 1907
8 सिद्दीकी,नफीज(2005), रुहेला इतिहास एवं संस्कृति 1707 से1774,पृ० सं०–533–34
9 जोशी, रीता, द अफगान नोबिलिटी एण्ड द मुगल (1526–1707), नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 1996.
10 गजेटियर ऑफ शाहजहाँनपुर डिस्ट्रिक, खण्ड–ग्ट, द यूनाइटेड प्रॉविन्सेस ऑफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद द सुप्रिटेंडेंट गवर्नमेन्ट प्रॉविन्सस, 1911